

Padma Shri



PROF. RAM YATNA SHUKLA

Prof. Ram Yatna Shukla is President of Kashi Vidwat Parishad, a more than 200 years old organization of intellectuals and scholar of Veda, Astrology, Paninian, Sanskrit Grammar and Indian philosophy, working as torch bearer of Sanskrit and Sanatan Sanskriti to guide and work towards preservation and promotion of the same. He is also founder of Nagkoop Sastrath Samit and Sanatan Sanskriti Samvardhan parishad who are engaged in uplifting of Sanskrit language and moral value of the society.

2. Born on 15th January, 1932, Prof. Shukla completed his Postgraduation (Acharya) in three subjects and Ph.D. from Sampurna Nand Sanskrit University, Varanasi and was also conferred D.Lit. from Indian Institute of Oriental Heritage-Kolkata. His passion to spread knowledge drove him towards teaching profession and his longest association was with Sampurna Nand Sanskrit University, Varanasi where he retired as Professor, Head of Department and Dean in the year 1992. During his journey as an educationist, he was associated with many premium institutions in India on the capacity of Principal, Lecturer, Reader and visiting professor to name a few are Banaras Hindu University (BHU), French Institute of Indology, Puducherry, Lal Bahadur Shastri University, New Delhi. Due to his contribution towards inventing new ways of Sanskrit Grammar and Vedanta teaching and modernization, he is popularly called as “Abhinav Panini”.

3. Prof. Shukla spent his life in an ascetic manner and even after his retirement in 1992 he has been serving very actively to promote Sanskrit, by educating, creating awareness & consulting the government for promotion of “Devbhasha Sanskrit”. While serving in various educational institutions as an educationist and administrator positions, he has been teaching & spreading the knowledge of Sanskrit through teaching at his residence free of cost in Gurukul Tradition & spreading the Indian ethos & culture in young generation from past 70 years. He has guided many students in their research work and taught many students who are currently leading various universities as a Professor, Vice Chancellor, Administrators & Mahant of various religious institutions. His multiple books & research paper has been published in world renowned publications & magazines. One of his key publication is “Vyakaran Darshne Shristi Prakriya Vimarsha”.

4. Even at the age of 89 years Prof. Shukla is serving as President of Kashi Vidwat Parishad, Founder of UP Naag Koop Shastrath Samiti and Founder of Sanatan Sanskriti Samvardhan Parishad through which he is contributing to promote and protect Sanatan Sanskriti, Sanskrit, to reach out young generation, support economically weaker section of society and carry out various social work.

5. Prof. Shukla has received more than 25 awards including Keshav Award, Vachaspati Award, Vishwabharti Award, Sarswati Putra Award etc. He has also been conferred the title of “Mahamahopadhye”.



प्रो. रामयत्न शुक्ल

प्रो. रामयत्न शुक्ल काशी विद्वत परिषद के अध्यक्ष हैं, जो वेद, ज्योतिष, पाणिनी, संस्कृत व्याकरण और भारतीय दर्शन के विचारकों और विद्वानों का 200 वर्षों से अधिक पुराना संगठन है, और जो इनके संरक्षण और सम्वर्धन की दिशा में मार्गदर्शन और कार्य करने के लिए संस्कृत और सनातन संस्कृति के ध्वज वाहक के रूप में काम कर रहे हैं। वह संस्कृत भाषा के उत्थान और समाज के नैतिक मूल्यों के उत्थान करने में सक्रिय नागकूप शास्त्रार्थ समिति और सनातन संस्कृति सम्वर्धन परिषद के संस्थापक भी हैं।

2. 15 जनवरी 1932 को जन्मे प्रो. शुक्ल ने तीन विषयों में स्नातकोत्तर (आचार्य) की पढ़ाई की और वाराणसी के सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की और उन्हें इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल हेरिटेज—कोलकाता द्वारा डी.लिट. की उपाधि भी प्रदान की गई। ज्ञान के प्रचार—प्रसार की उनकी उत्कृष्ट भावना ने उन्हें अध्यापनवृत्ति की ओर प्रेरित किया और उनका सबसे लंबा जुड़ाव सपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के साथ रहा, जहां से वह वर्ष 1992 में प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष और डीन के रूप में सेवानिवृत्त हुए। एक शिक्षाविद् के रूप में अपनी यात्रा के दौरान, वह भारत के कई उत्कृष्ट संस्थानों के साथ प्राचार्य, व्याख्याता, रीडर और विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में जुड़े जिनमें से कुछ नाम बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, फ्रेंच इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी, पुदुच्चेरी, लाल बहादुर शास्त्री विश्वविद्यालय, नई दिल्ली हैं। संस्कृत व्याकरण और वेदांत शिक्षण और आधुनिकीकरण की नई पद्धतियों की खोज करने में उनके योगदान के कारण, उन्हें “अभिनव पाणिनी” कहा जाता है।

3. प्रो. शुक्ल ने अपना जीवन तपस्वी की भांति बिताया और 1992 में सेवानिवृत्ति के बाद भी वह संस्कृत की शिक्षा प्रदान करके, “देवभाषा संस्कृत” के बारे में जागरूकता फैलाकर और इसे बढ़ावा देने के लिए सरकार को परामर्श देकर अत्यंत सक्रियता के साथ संस्कृत को बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं। विभिन्न शिक्षा संस्थानों में शिक्षाविद् और प्रशासक के पदों के रूप में कार्य करते हुए, वह पिछले 70 वर्षों से गुरुकुल परंपरा के अनुसार अपने निवास पर निःशुल्क शिक्षण के माध्यम से संस्कृत ज्ञान का अध्यापन और प्रचार—प्रसार कर रहे हैं और युवा पीढ़ी में भारतीय लोकाचार और संस्कृति का प्रसार कर रहे हैं। उन्होंने शोध कार्य में कई छात्रों का मार्गदर्शन किया है और अनेक छात्रों को पढ़ाया है जो वर्तमान में विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर, कुलपति, प्रशासक और विभिन्न धार्मिक संस्थानों के महंत के रूप में कार्य कर रहे हैं। उनकी कई पुस्तकें और शोधपत्र विश्व प्रसिद्ध प्रकाशनों और पत्रिकाओं में प्रकाशित किए गए हैं। उनके प्रमुख प्रकाशनों में से “व्याकरण दर्शने सृष्टि प्रक्रिया विमर्श” एक है।

4. 89 वर्ष की आयु में भी प्रो. शुक्ल काशी विद्वत परिषद, उत्तर प्रदेश, नाग कूप शास्त्रार्थ समिति के संस्थापक, और सनातन संस्कृति संवर्धन परिषद के संस्थापक के रूप में कार्यरत हैं, जिनके माध्यम से वह सनातन संस्कृति और संस्कृत की रक्षा करने और बढ़ावा देने, युवा पीढ़ी से सम्पर्क बढ़ाने, समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की मदद करने और अनेक सामाजिक कार्यों में योगदान दे रहे हैं।

5. प्रो. शुक्ल को 25 से अधिक पुरस्कार प्रदान किए गए हैं जिनमें केशव पुरस्कार, वाचस्पति पुरस्कार, विश्वभारती पुरस्कार, सरस्वती पुत्र पुरस्कार आदि शामिल हैं। उन्हें “महामहोपाध्याय” की उपाधि भी प्रदान की गई है।